मातृ स्मृति

सहा बाल्यकाल में ही जननी विछोह दुख,

देवी यशोदा गयीं थीं सुर धाम को ।

जनक जनक के समान ही विराग युक्त,

बैजनाथ भजते सदैव शिव नाम को ।

आयीं बन बालिका वधू ही श्वसुरालय में ,

मिलीं भगवान् की कृपा सी भगवान् को ।

कुल की समाज की सयत्न पाली सारी विधि,

पालतीं रहीं सदैव धर्म के विधान को । 1 ।

पावन चरित बुद्धि निर्मल प्रशान्त मन,

धर्म रूचि होकर भी रुग्णता पहेली थी ।

स्वल्प धन तुष्ट सदा मानस प्रसाद युक्त,

देहज व्यथा भी हँस चिरकाल झेली थी ।

आतिथ्य भाव परिपूरित उर धारिणीं थीं,

मोद मयी जन बीच रहीं न अकेलीं थीं ।

राम दास अनुजा ने राम रटे ध्यान कर,

राम के ही धाम गयीं राम की सहेली थीं । 2 ।

09.02.2023 शिव कुमार मिश्र

भोपाल